प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

इसी तरह तुम अन्तर में स्थिर रह पाओगे और शालीनता के साथ जीवन में गतिमान हो पाओगे। जो मार्ग पीछे रह गया है, हो सकता है कि वह स्पष्ट रहा हो या धुँधला रहा हो। और सम्भवतः ऐसा ही भविष्य में भी हो। अपने मार्ग के प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण—वह मार्ग चाहे चढ़ाई वाला नज़र आ रहा हो या ढलान वाला, चाहे वह सीधा दिखाई दे रहा हो या टेढ़ा-मेढ़ा, चाहे तुम्हारी मंज़िल पास लग रही हो या बहुत, बहुत दूर—इस रंग से रँगा होता है कि तुम उसका सामना किस तरह कर रहे हो या किस तरह नहीं कर रहे हो। पर क्या तुम्हारा बुनियादी यक़ीन यह नहीं रहा है कि "प्रेम है"? यदि हाँ तो यह संकल्प बनाए रखो, "मुझे प्रेम की ओर बढ़ते ही रहना होगा ताकि मैं हमेशा अपने लिए और दूसरों के लिए प्रेम की ज्योत को उज्ज्वलता से जगमगाए रखूँ।" अपने भीतर यह बीज बो दो : *प्रेम अनश्वर है।*

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।